पाठ – दोहे

शब्दार्थ-

1. **रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।**
   टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

शब्दार्थ –

- चटकाय – झटके से
- परि जाय – पड़ जाती है

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि प्रेम का बंधन किसी धागे के समान होता है, जिसे कभी भी झटके से नहीं तोड़ना चाहिए बल्कि उसकी हिफ़ाज़त करनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेम का बंधन बहुत नाज़ुक होता है, उसे कभी भी बिना किसी मजबूत कारण के नहीं तोड़ना चाहिए। क्योंकि जब कोई धागा एक बार टूट जाता है तो फिर उसे जोड़ा नहीं जा सकता। टूटे हुए धागे को जोड़ने की कोशिश में उस धागे में गाँठ पड़ जाती है। उसी प्रकार किसी से रिश्ता जब एक बार टूट जाता है तो फिर उस रिश्ते को दोबारा पहले की तरह जोड़ा नहीं जा सकता।

2. **रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।**
   सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय॥

शब्दार्थ –

- निज – अपने
- बिथा – दर्द
- अठिलैहैं – मज़ाक उड़ाना
- बाँटि – बाँटना
- कोय – कोई

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि अपने मन की पीड़ा या दर्द को दूसरों से छुपा कर ही रखना चाहिए। क्योंकि जब आपका दर्द किसी अन्य व्यक्ति को पता चलता है तो वे लोग उसका मज़ाक ही उड़ाते हैं। कोई भी आपके दर्द को बाँट नहीं सकता। अर्थात कोई भी व्यक्ति आपके दर्द को कम नहीं कर सकता।

3. **एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।**
   रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय॥

शब्दार्थ –

- मूलहिं – जड़ में
- सींचिबो – सिंचाई करना
- अघाय – तृप्त

egyanarchive

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि एक बार में केवल एक कार्य ही करना चाहिए। क्योंकि एक काम के पूरा होने से कई और काम अपने आप पूरे हो जाते हैं। यदि एक ही साथ आप कई लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे तो कुछ भी हाथ नहीं आता। क्योंकि आप एक साथ बहुत कार्यों में अपना शत-प्रतिशत नहीं दे सकते। रहीम कहते हैं कि यह वैसे ही है जैसे किसी पौधे में फूल और फल तभी आते हैं जब उस पौधे की जड़ में उसे तृप्त कर देने जितना पानी डाला जाता है। अर्थात जब पौधे में पर्याप्त पानी डाला जाएगा तभी पौधे में फल और फूल आएँगे।

4. **चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।**
   जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस॥

शब्दार्थ –

- अवध – रहने लायक न होना
- बिपदा – विपत्ति

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि जब राम को बनवास मिला था तो वे चित्रकूट में रहने गये थे। रहीम यह भी कहते हैं कि चित्रकूट बहुत घना व अँधेरा वन होने के कारण रहने लायक जगह नहीं थी। परन्तु रहीम कहते हैं कि ऐसी जगह पर वही रहने जाता है जिस पर कोई भारी विपत्ति आती है। कहने का अभिप्राय यह है कि विपत्ति में व्यक्ति कोई भी कठिन-से-कठिन काम कर लेता है।

5. **दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।**
   ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं॥

शब्दार्थ –

- अरथ – अर्थ
- आखर- अक्षर, शब्द
- थोरे – थोड़े, कम

व्याख्या – रहीम जी का कहना है कि उनके दोहों में भले ही कम अक्षर या शब्द हैं, परंतु उनके अर्थ बड़े ही गहरे और बहुत कुछ कह देने में समर्थ हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे कोई नट अपने करतब के दौरान अपने बड़े शरीर को सिमटा कर कुंडली मार लेने के बाद छोटा लगने लगता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी के आकार को देख कर उसकी प्रतिभा का अंदाज़ा नहीं लगाना चाहिए।

6. **धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पियत अघाय।**
   उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

शब्दार्थ –

- धनि – धन्य

egyanarchive

- पंक – कीचड़
- लघु – छोटा
- उदधि – सागर
- पिआसो – प्यासा

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि कीचड़ में पाया जाने वाला वह थोड़ा सा पानी ही धन्य है क्योंकि उस पानी से न जाने कितने छोटे-छोटे जीवों की प्यास बुझती है। लेकिन वह सागर का जल बहुत अधिक मात्रा में होते हुए भी व्यर्थ होता है क्योंकि उस जल से कोई भी जीव अपनी प्यास नहीं बुझा पता। कहने का तात्पर्य यह है कि बड़ा होने का कोई अर्थ नहीं रह जाता यदि आप किसी की सहायता न कर सको।

7. **नाद रीझि तन देत मृग, नर धन देत समेत।**
   ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत॥

शब्दार्थ –

- नाद – संगीत की ध्वनि
- रीझि – मोहित हो कर, खुश हो कर

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि जिस प्रकार हिरण किसी के संगीत की ध्वनि से खुश होकर अपना शरीर न्योछावर कर देता है अर्थात अपने शरीर को उसे सौंप देता है। इसी तरह से कुछ लोग दूसरे के प्रेम से खुश होकर अपना धन इत्यादि सब कुछ उन्हें दे देते हैं। लेकिन रहीम कहते हैं कि कुछ लोग पशु से भी बदतर होते हैं जो दूसरों से तो बहुत कुछ ले लेते हैं लेकिन बदले में कुछ भी नहीं देते। कहने का अभिप्राय यह है कि यदि कोई आपको कुछ दे रहा है तो आपका भी फ़र्ज़ बनता है कि आप उसे बदले में कुछ न कुछ दें।

egyanarchive

8. **बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।**
   रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

शब्दार्थ –

- बिगरी – बिगड़ी
- फाटे दूध – फटा हुआ दूध
- मथे – मथना

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि कोई बात जब एक बार बिगड़ जाती है तो लाख कोशिश करने के बावजूद उसे ठीक नहीं किया जा सकता। यह वैसे ही है जैसे जब दूध एक बार फट जाये तो फिर उसको मथने से मक्खन नहीं निकलता। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें किसी भी बात को करने से पहले सौ बार सोचना चाहिए क्योंकि एक बार कोई बात बिगड़ जाए तो उसे सुलझाना बहुत मुश्किल हो जाता है।

9. **रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।**
   जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि॥

शब्दार्थ –

- बड़ेन – बड़ा
- लघु – छोटा
- आवे – आना

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि किसी बड़ी चीज को देखकर किसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अर्थात बड़ी चीज़ के होने पर किसी छोटी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए। क्योंकि जहाँ छोटी चीज की जरूरत होती है वहाँ पर बड़ी चीज बेकार हो जाती है। जैसे जहाँ सुई की जरूरत होती है वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी भी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए क्योंकि हर एक चीज़ का अपनी-अपनी जगह महत्व होता है।

10. **रहिमन निज संपति बिन, कौ न बिपति सहाय।**
    बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय॥

शब्दार्थ –

- निज – अपना
- बिपति – विपत्ति
- सहाय – सहायता
- जलज – कमल
- रवि – सूर्य

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि जब आपके पास धन नहीं होता है तो कोई भी विपत्ति में आपकी सहायता नहीं करता। यह वैसे ही है जैसे यदि तालाब सूख जाता है तो कमल को सूर्य जैसा प्रतापी भी नहीं बचा पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आपका धन ही आपको आपकी मुसीबतों से निकाल सकता है क्योंकि मुसीबत में कोई किसी का साथ नहीं देता।

11. **रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।**
    पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

शब्दार्थ –

- बिनु – बगैर, बिना
- सून – असंभव

व्याख्या – इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के लिए लिया गया है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्र (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ

egyanarchive

आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका जीवन जीना व्यर्थ हो जाता है।

प्रश्न-अभ्यास (मौखिक)

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के **उत्तर** दीजिए-

(क) प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?

(ख) हमें अपना दुख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?

(ग) रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?

(घ) एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?

(ङ) जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?

(च) अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?

(छ) "नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?

(ज) "मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

(क) प्रेम आपसी लगाव, आकर्षण और विश्वास के कारण होता है। यदि एक बार यह लगाव और विश्वास टूट जाए तो फिर उसमें पहले जैसा भाव नहीं रहता। एक दरार मन में आ ही जाती है। ठीक वैसे जैसे कि धागा टूटने पर जुड़ नहीं पाता। यदि उसे जोड़ा जाए तो गाँठ पड़ ही जाती है।

(ख) हमें अपना दु:ख दूसरों पर प्रकट नहीं करना चाहिए। कारण यह है कि लोग दु:ख की बात सुनकर प्रसन्न ही होते हैं। वे उसे बाँटने को तैयार नहीं होते। उनका व्यवहार मित्रों जैसा नहीं, अपितु बेगानों जैसा हो जाता है।

(ग) रहीम ने सागर को धन्य इसलिए नहीं कहा क्योंकि उसका जल खारा होता है। वह किसी की प्यास नहीं बुझा पाता। उसकी तुलना में पंक का जल धन्य होता है क्योंकि उसे पीकर कीट-पतंगे अपनी प्यास बुझा लेते हैं।

(घ) एक परमात्मा को साधने से अन्य सारे काम अपने-आप सध जाते हैं। कारण यह है कि परमात्मा ही सबको मूल है। जैसे मूल अर्थात् जड़ को सींचने से फल-फूल अपने-आप उग आते हैं, उसी प्रकार परमात्मा को साधने से अन्य सब कार्य कुशलतापूर्वक संपन्न हो जाते हैं।

(ङ) कमल की मूल संपत्ति है-जल। उसी के होने से कमल जीवित रहता है। यदि वह न रहे तो सूर्य भी कमल को जीवन नहीं दे सकता। सूर्य बाहरी शक्ति है। जल भीतरी शक्ति है। इसी भीतरी शक्ति से ही जीवन चलता है।

egyanarchive

(च) अवध नरेश अर्थात् श्रीराम को चित्रकूट इसलिए जाना पड़ा क्योंकि उन्हें माता-पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए चौदह वर्षों तक वनवास भोगना था। उसी वनवास के दौरान उन्हें चित्रकूट जैसे रमणीय वन में रुकने का अवसर मिला।

(छ) नट स्वयं को समेटकर, सिकोड़कर तथा संतुलित करने के कारण कुंडली में से निकल जाता है और तार पर चढ़ जाता है।

(ज) 'मोती' के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है-चमक। रहीम का कहना है कि चमक के बिना मोती का कोई मूल्य नहीं होता। 'मानुष' के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है-आत्म-सम्मान। रहीम का कथन है कि आत्म-सम्मान के बिना मनुष्य का कोई मूल्य नहीं होता।

'चून' के संदर्भ में पानी का महत्व सर्वोपरि है। बिना पानी के आटे की रोटी नहीं बनाई जा सकती। इसलिए वहाँ पानी का होना अनिवार्य है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

(ख) सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।

(ग) रहिमन मूलहिं सचिबो, फूलै फलै अघाय।

(घ) दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।

(ङ) नाद :रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत

(च) जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।

(छ) पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।

उत्तर-

(क) भाव यह है कि प्रेम का बंधन अत्यंत नाजुक होता है। इसमें कटुता आने पर मन की मलिनता कहीं न कहीं बनी ही रह जाती है। प्रेम का यह बंधन टूटने पर सरलता से नहीं जुड़ता है। यदि जुड़ता भी है तो इसमें गाँठ पड़ जाती है।

(ख) भाव यह है कि जब हम सहानुभूति और मुद्रदै पाने की आशा से अपना दुख दूसरों को सुनाते हैं तो लोग सहानुभूति दर्शाने और मदद करने की अपेक्षा हमारा मजाक उड़ाना शुरू कर देते हैं। अतः दूसरों को अपना दुख बताने से बचना चाहिए।

(ग) भाव यह है कि किसी पेड़ से फल-फूल पाने के लिए उसके तने, पत्तियों और शाखाओं को पानी देने के बजाय उसकी जड़ों को पानी देने से ही वह खूब हरा-भरा होता है और फलता-फूलता है। इसी तरह एक समय में एक ही काम करने पर उसमें सफलता मिलती है।

(घ) भाव यह है कि किसी वस्तु का आकार ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, महत्त्व होता है उसमें निहित अर्थ का। दोहे का महत्त्व इसलिए है कि वह कम शब्दों में गूढ़ अर्थ समेटे रहता है।

egyanarchive

(ङ) भाव यह है कि प्रसन्न होने पर मनुष्य ही नहीं, पशु भी अपना तने तक दे देते हैं परंतु कुछ मनुष्य पशुओं से भी बढ़कर पशु होते हैं। वे धन के लिए अपना सब कुछ दे देते हैं।
(च) भाव यह है कि वस्तु की महत्ता उसके आकार के कारण नहीं, बल्कि उसकी उपयोगिता के कारण होती है। छोटी से छोटी वस्तु का भी अपना महत्व होता है, क्योंकि जो काम सुई कर सकती है उसे तलवार नहीं कर सकती है।
(छ) भाव यह है कि मनुष्य को सदैव पानी बचाकर रखना चाहिए क्योंकि पानी (चमक) जाने पर मोती साधारण पत्थर, सी रह जाती है, पानी (इज्जत) जाने पर मनुष्य स्वयं को अपमानित-सा महसूस करता है और पानी (जल) न रहने पर आटे से रोटियाँ नहीं बनाई जा सकती हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है-

1. जिस पर विपदा पड़ती है वही इस देश में आता है।
2. कोई लाख कोशिश करें पर बिगड़ी बात फिर बन नहीं सकती।
3. पानी के बिना सब सूना है अतः पानी अवश्य रखना चाहिए।

उत्तर-

1. जा पर विपदा पड़त है, सो आवत यह देस।
2. बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
3. रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।

प्रश्न 4. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

उत्तर

1. ज्यों – जैसे
2. कुछ – कछु
3. नहिं – नहीं
4. कोय – कोई
5. धनि – धनी
6. आखर – अक्षर
7. जिय – जी
8. थोरे – थोडे
9. होय – होना
10. माखन – मक्खन
11. तरवारि – तलवार
12. सींचिबो – सिंचाई करना

egyanarchive

13.मूलहिं – मूल
14.पिअत – पीना
15.पियासो – प्यासा
16.बिगरी – बिगड़ी
17.आवे – आए
18.सहाय – सहायक
19.ऊबरै – उबरना
20.बिनु – बिना
21.बिथा – व्यथा
22.अठिलैहैं – अठखेलियाँ
23.परिजाय – पड़ जाए

योग्यता-विस्तार

प्रश्न 1. 'सुई की जगह तलवार काम नहीं आती' तथा 'बिन पानी सब सून' इन विषयों पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर-

विषय 1: "सुई की जगह तलवार काम नहीं आती"

भावार्थ:

यह कहावत यह सिखाती है कि हर काम के लिए सही तरीका और सही साधन चाहिए। बल प्रयोग या बड़े उपाय हर समस्या का हल नहीं होते, कभी-कभी धैर्य, बारीकी और सूझबूझ की आवश्यकता होती है।

परिचर्चा की संभावित दिशा:

- छोटे-छोटे कामों के लिए सूक्ष्मता और धैर्य जरूरी है।
- हर समस्या का समाधान बल से नहीं होता।
- बुद्धिमानी और कुशलता का महत्व।
- उदाहरण: सिलाई के लिए सुई जरूरी है, तलवार से तो कपड़ा फट जाएगा।
- जीवन में भी कभी-कभी धैर्य से, सोच-समझ से काम लेना जरूरी होता है।

कुछ प्रश्न कक्षा के लिए:

- क्या आप ऐसे किसी अनुभव को साझा कर सकते हैं जहाँ धैर्य और सही तरीके ने जीत दिलाई?
- क्या हमेशा बल प्रयोग करना सही है? क्यों?
- जीवन में "सुई" और "तलवार" जैसी परिस्थितियाँ कहाँ आती हैं?

egyanarchive

2. विषय 2: "बिन पानी सब सून"

भावार्थ:

जल जीवन का आधार है। बिना पानी के धरती पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

परिचर्चा की संभावित दिशा:

- पानी का हमारे जीवन में महत्व।
- जल संरक्षण की आवश्यकता।
- प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान और संरक्षण।
- भविष्य में पानी की कमी के परिणाम।
- व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर जल बचत के उपाय।

कुछ प्रश्न कक्षा के लिए:

- जल संकट से निपटने के लिए हम व्यक्तिगत रूप से क्या कर सकते हैं?
- क्या आपने पानी की बर्बादी होते हुए देखा है? क्या किया आपने?
- भविष्य में अगर पानी कम हो गया तो जीवन कैसा होगा?

परिचर्चा आयोजन के सुझाव:

- छात्रों को 2-2 मिनट बोलने का अवसर दें।
- दोनों विषयों पर 2-3 उदाहरण या कहानियाँ शामिल कर सकते हैं।
- प्रश्न-**उत्तर** सत्र रखें ताकि ज्यादा छात्र सक्रिय हों।
- परिचर्चा के अंत में शिक्षक एक छोटा सा सारांश दें, जिसमें मुख्य बिंदुओं को दोहराया जाए।

egyanarchive

प्रश्न 2. 'चित्रकूट' किस राज्य में स्थित है, जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर- चित्रकूट' **उत्तर** प्रदेश राज्य के दक्षिणी छोर पर स्थित बाँदा जनपद में स्थित है। अयोध्या से लक्ष्मण और सीता के साथ वनवास जाते समय राम ने यहाँ कुछ दिन बिताया था। तब से इसकी गणना तीर्थ स्थान के रूप में की जाती है।

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. नीति संबंधी अन्य कवियों के दोहे/कविता एकत्र कीजिए और उन दोहों/कविताओं को चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

उत्तर-

संत कबीर दास के नीति दोहे

१. धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।।

भावार्थ:

हर काम अपने समय पर ही पूरा होता है, चाहे हम कितनी भी जल्दी करें। धैर्य आवश्यक है।

२. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

भावार्थ:

केवल ऊँचाई (बड़े पद या ज्ञान) का घमंड व्यर्थ है, यदि उससे दूसरों को लाभ न मिले।

---

2. रहीम के नीति दोहे

१.रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।।

भावार्थ:

प्रेम का बंधन बहुत नाजुक होता है, एक बार टूटने पर उसे जोड़ना कठिन होता है।

२. देनहार कोई और है, भेजत है दिन रैन।
लोग भरम हम पर करें, तासो नीचे नैन।।

भावार्थ:

देने वाला ईश्वर है, हम तो माध्यम मात्र हैं। हमें इस पर घमंड नहीं करना चाहिए।

---

3. संत तुलसीदास के नीति दोहे

१. सत्य, शिव, सुंदर सबै, एक तराजू तौल।
भय, द्वेष, लोभ, मोह मिट, तब पावसि अनमोल।।

भावार्थ:

जब मन से भय, द्वेष, लोभ और मोह मिटते हैं, तभी सच्चाई, सुंदरता और कल्याण को पाया जा सकता है।

२. जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।।

भावार्थ:

जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसा ही अनुभव होता है।

---

4. भर्तृहरि नीति शतक (नीति श्लोक)

(संस्कृत श्लोक का सरल हिंदी रूपांतरण)

egyanarchive

१. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।।

भावार्थ:

विद्या मनुष्य का सबसे बड़ा गुप्त धन है, जो सुख और सम्मान देती है। विद्या ही गुरुजनों की भी गुरु है।

---

5. नीति से जुड़ी एक छोटी कविता (स्वरचित - कक्षा में उपयोग के लिए)

नीति की राह जो चलता है,
सत्य-सदाचार से पलता है।
भले राह कठिन हो जीवन की,
पर जीत उसी की कहलाती है।।
स्वार्थ न जोड़े मन को अपने,
करुणा से भरे हो सपने।
नीति-सम्मान का दीप जलाओ,
जग में सच्ची राह दिखलाओ।।

egyanarchive